e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201071 |

अजमेर जिले में परिवहन अभिगम्यता एवं क्षेत्रीय विकास

[1]डॉ. डी. सी. डूडी & [2]इंद्राज बाजिया

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय शाकम्भर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभर लेक, राजस्थान

[2]शोधार्थी, भूगोल विभाग , राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

सार

अजमेर भारतीय राज्य राजस्थान का एक जिला है। राजस्थान राज्य का हृदयस्थल अजमेर जिला राजस्थान राज्य के मध्य में 25 डिग्री 38' से 26 डिग्री 50' उतरी अक्षांश एवं 73 डिग्री 54' से 75 डिग्री 22' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित हैं। अजमेर उत्तर-पश्चिमी रेल्वे के दिल्ली-अहमदाबाद मार्ग पर स्थित हैं जो जयपुर के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 135 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। अजमेर तारागढ़ की पहाड़ी, जिसके शिखर पर किला है, निचली ढलानों पर यह शहर स्थित है। पर्वतीय क्षेत्र में बसा अजमेर अरावली पर्वतमाला का एक हिस्सा है, जिसके दक्षिण-पश्चिम में लूणी नदी व पूर्वी हिस्से में बनास की सहायक नदियाँ बहती हैं। मुग़लों की बेगम और शहजादियाँ यहाँ अपना समय व्यतीत करती थी। इस क्षेत्र को इत्र के लिए प्रसिद्ध बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ था। कहा जाता है कि नुरजहाँ ने गुलाब के इत्र को ईजाद किया था। कुछ लोगों का मानना है यह इत्र नूरजहाँ की माँ ने ईजाद किया था। अजमेर में पान की खेती भी होती है। इसकी महक और स्वाद गुलाब जैसी होती है। वर्तमान मे जिला 12 उपखण्ड, 11 पंचायत समिति समिति व 19 तहसील मे विभाजित है। अजमेर शहर का नाम अजयमेरू के नाम पर पड़ा हैं। जिसकी स्थापना 1113 ई. में चौहान राजा अजयराज ने की थी। [1] अजमेर से 10 किलोमीटर दूर स्थित अजयपाल का मंदिर आज भी अजमेर के संस्थापक की याद दिलाता हैं। अजमेर नगर घुघरा घाटी को केंद्र मानकर बसाया गया।12 वीं शताब्दी में चौहान राजा अजयराज के समय यह एक महत्त्वपूर्ण नगर बन गया था। अजमेर का वास्तविक संस्थापक अजयराज चौहान को माना जाता हैं। चौहान राजा अजयराज ने 1113 ई. में अजमेर नगर की स्थापना की थी । अजयराज ने अपनी राजधानी का नाम अजयमेरु रखा । जबकि अजयपाल ने 7 वी सदी में बिठली पहाड़ी पर एक क़िला गढ़-बिठली नाम से बनवाया था। जो बाद में अजयराज के द्वारा स्थापित 1113 ई. में अजमेर नगर के नाम से अजयमेरु कहलाया । जिसे कर्नल टाड ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ में राजपूताने की कुँजी कहा है। पर ये चोहनो की कुँजी है जिसका मुख्यालय अजमेर है।जिसका क्षेत्रफल - 8841 वर्ग कि°मी° है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 2584913 है।

परिचय

राजपुताना व बंबई गजट के अनुसार अजमेर पर 700 वर्षों तक चौहान वंश के राजपूतो का राज था। [1] अजमेर में 1153 ई में प्रथम नरेश बीसलदेव चौहान ने एक मन्दिर बनवाया था, जिसे 1192 ई. में मुहम्मद ग़ोरी ने नष्ट करके उसके स्थान पर अढ़ाई दिन का झोंपड़ा नामक मस्जिद बनवाई थी। कुछ विद्वानों का मत है, कि इसका निर्माता कुतुबुद्दीन ऐबक था। कहावत है, कि यह इमारत अढ़ाई दिन में बनकर तैयार हुई थी, किन्तु ऐतिहासिकों का मत है, कि इस नाम के पड़ने का कारण इस स्थान पर मराठा काल में होने वाला अढ़ाई दिन का मेला है।[1,2] इस इमारत की क़ारीगरी विशेषकर पत्थर की नक़्क़ाशी प्रशंसनीय है। इससे पहले सोमनाथ जाते समय (1124 ई.) में महमूद ग़ज़नवी अजमेर होकर गया था। मुहम्मद ग़ौरी ने जब 1192 ई. में भारत पर आक्रमण किया, तो उस समय अजमेर पृथ्वीराज के राज्य का एक बड़ा नगर था। पृथ्वीराज की पराजय के पश्चात दिल्ली पर मुसलमानों का अधिकार होने के साथ अजमेर पर भी उनका क़ब्ज़ा हो गया और फिर दिल्ली के भाग्य के साथ-साथ अजमेर के भाग्य का भी निपटारा होता रहा। 1193 में दिल्ली के ग़ुलाम वंश ने इसे अपने अधिकार में ले लिया। मुग़ल सम्राट अकबर को अजमेर से बहुत प्रेम था, क्योंकि उसे मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की यात्रा में बड़ी श्रृद्धा थी। एक बार वह आगरा से पैदल ही चलकर दरग़ाह की ज़ियारत को आया था। मुईनुद्दीन चिश्ती 12वीं शती ई. में ईरान से भारत आए थे। अकबर और जहाँगीर ने इस दरग़ाह के पास ही मस्जिदें बनवाई थीं। शाहजहाँ ने अजमेर को अपने अस्थायी निवास-स्थान के लिए चुना था। निकटवर्ती तारागढ़ की पहाड़ी पर भी उसने एक दुर्ग-प्रासाद का निर्माण करवाया था, जिसे विशप हेबर ने भारत का जिब्राल्टर कहा है।[3,4]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201071 |

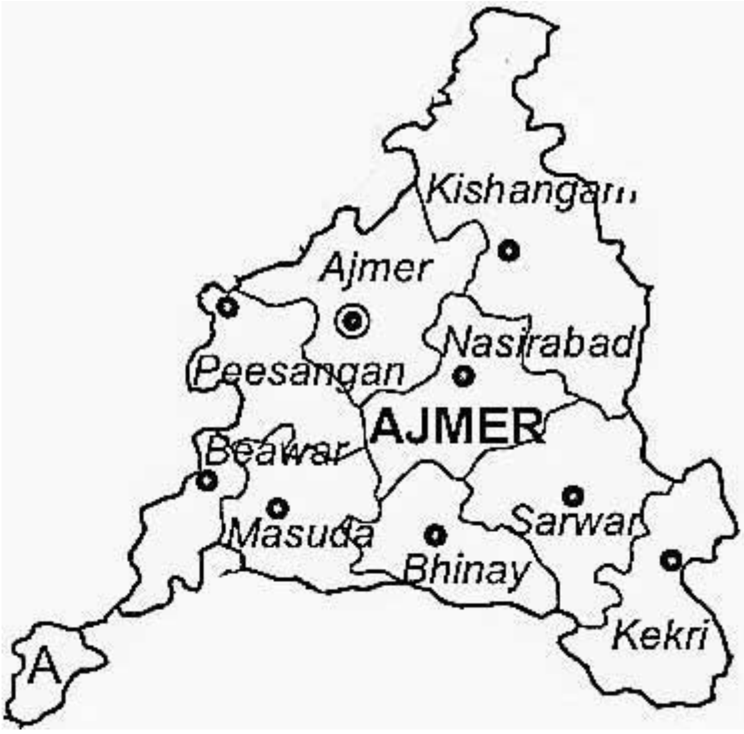

यह निश्चित है, मुगलकाल में अजमेर को अपनी महत्त्वपूर्ण स्थिति के कारण राजस्थान का नाक़ा समझा जाता था। अजमेर के पास ही अनासागर झील है, जिसकी सुन्दर पर्वतीय दृश्यावली से आकृष्ट होकर शाहजहाँ ने यहाँ पर संगमरमर के महल बनवाए थे। यह झील अजमेर-पुष्कर मार्ग पर है। सन् 1878 में अन्ग्रेजों ने वर्धनोरा (बदनोरा) राज्य में अजमेर और केकड़ी प्रान्त को सामिल कर अजमेर मेरवाड़ा के नाम से संयुक्त स्टेट बनाकर केन्द्रीय शासक प्रदेश बनाया था। 1956 में यह राजस्थान राज्य का हिस्सा बन गया। वर्तमान में अजमेर के जिला प्रमुख विश्वमोहन शर्मा है। बीसलदेव चौहान या विग्रहराज प्रथम 8 वी. शताब्दी के चौहान -राजवंश के प्रतापी राजा थे। अरबों से युद्ध भूमि में लड़ते हुए राणा सांगा की भाती इनका दाहिना हाथ कट गया था। बीसलदेव चौहान चौहान वंश की सबसे प्रतापी राजा जिन्होंने अजमेर पर शासन किया वह अजमेर का साम्राज्य आधुनिक मेवाड़ का साम्राज्य भी इसमें सम्मिलित था जैसे भीलवाड़ा राजसमंद इन्हीं के साम्राज्य में आते थे।[5,6]

इनके छोटे भाई मांडलजी चौहान ने जिन्होंने मेवाड़ में भीलवाड़ा जिले के पास प्रसिद्ध मंडल झील की स्थापना की थी। मंडलजी, अजमेर के राजा बिसाल देव चौहान (विशाल देव चौहान) के भाई थे, जिन्होंने ने संभवत: 8 वीं शताब्दी में अजमेर पर शासन किया था और साथ ही अरब घुसपैठ का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया और तोमर वंश के शासकों को दिल्ली पर नियंत्रण पाने में मदद की।[7]

अजमेर पहुँचने के लिए सबसे बेहतर विकल्प रेल मार्ग है। दिल्ली से दिल्ली-अहमदाबाद एक्सप्रेस द्वारा आसानी से अजमेर पहुँचा जा सकता है। रेलमार्ग के अलावा राष्ट्रीय राजमार्ग 8 से निजी वाहन द्वारा भी बेहरोड और जयपुर होते हुए अजमेर पहुँचा जा सकता है। अजमेर में कृषि मुख्य व्यवसाय है और मुख्यतः मक्का, गेहूँ, बाजरा, चना, कपास, तिलहन, मिर्च व प्याज़ उगाए जाते हैं। यहाँ पर अभ्रक, लाल स्फटिक घातु और इमारती पत्थर की खुदाई होती है। सड़क व रेल मार्गों से जुड़ा अजमेर नमक, अभ्रक, कपड़े व कृषि उत्पादों का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है और यहाँ तिलहन, होज़री, ऊन, जूते, साबुन व दवा निर्माण से जुड़े छोटे-छोटे अनेक उद्योग हैं। अजमेर कपड़ों की रंगाई व बुनाई तथा अपने हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है।[7]

दौलत बाग, आनासागर झील, तारागढ़ का किला, श्री देवनारायण भगवान मंदिर ((देव धाम देवमाली मसूदा तहसील)), चामुंडा माता मंदिर बोराज, जगतपीता ब्रम्हा मंदिर पुष्कर, नसीराबाद छावनी, सावित्री माता मंदिर पुष्कर, पृथ्वीराज चौहान स्मारक, मार्बल नगरी किशनगढ़, श्री धोलिया वीर तेजाजी महाराज मंदिर सुरसुरा (रूपनगढ़), पुष्कर झील, ब्यावर, दरगाह शरीफ, अजमेर के क़रीब तीर्थराज पुष्कर है। कहा जाता है कि यह वही स्थान है जहाँ सुफी संत हजरत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती ने आख़िरी बार

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201071 |

विश्राम किया था। जहाँ लोग दूर-दूर से दर्शन के लिए आते हैं। मकबरा हजरत ख़्वाजा हुसैन चिश्ती (औलाद-ए-ख़्वाजा), मकबरा हजरत अलाउद्दीन चिश्ती (औलाद-ए-ख़्वाजा), सोनी जी की नस्सिया, नारेली तीर्थ, अढाई दिन का झोपडा, फोयसागर, अकबर का किला। अकबर की मैगजीन इसी को कहा जाता है। अजमेर मे तारागढ़ है| तारागढ़ को गढवीठली दुर्ग के नाम से जाना जाता है।6,7]

विचार-विमर्श

जिला कलक्टर श्री अंश दीप ने रीट परीक्षा आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्थाओं का क्षेत्र में जायजा लिया। परिक्षार्थियों की सुविधा के सम्बन्ध में प्रशासनिक एवं विभागिय अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। रीट परीक्षा 2022 के लिए निर्देशानुसार जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग, नगर निगम एवं रोडवेज द्वारा पूर्ण की गईव्यवस्थाओं का जायजा लिया। अभ्यर्थियों के निर्वाध एवं सुचारू परिवहन व्यवस्था के लिए समस्त आवश्यक व्यवस्थाओं के बारे मेंप्रादेशिक परिवहन अधिकारी डा. वीरेन्द्र सिंह राठौड ने जानकारी दी। राज्य सरकार द्वारा रीट परीक्षा के अभ्यर्थियों के लिए रोडवेज बसों के साथ-साथ प्राईवेट बसाें में भी अभ्यर्थियो के लिए निःशुल्क यात्रा की सुविधा दी गई है।

श्री राठौड़ ने बताया कि अजमेर के विभिन्न तहसील एवं उपखण्ड मुख्यालयाें ब्यावर, भिनाय, किशनगढ, मसूदा, केकडी, सरवाड, पीसांगन, नसीराबाद के निर्धारित बस स्टेण्ड पर 22 जुलाई रात्री को ही बसें खडी करवा दी गई है। परीक्षा के दोनाें दिन ही ये बसें प्रथम पारी के लिए प्रातः 6 बजे एवं द्वितीय पारी के लिए प्रातः 10 बजे से प्रस्थान करेगी। सबसे पहले अजमेर के लिए सम्बन्धित उपखण्ड अधिकारीयाें एवं सम्बन्धित जिला परिवहन अधिकारी की देखरेख मे रवाना होगी। ये बसें अभ्यर्थियों को वापस अजमेर से उनके गन्तव्य तक ले जाने में भी प्रयुक्त की जाएगी।उन्होंने बताया कि अजमेर जिला मुख्यालय पर परिवहन व्यवस्था के परिपेक्ष्य में केन्द्रीय रोडवेज बस स्टेण्ड के अलावा आजाद पार्क पर अस्थायी बस स्टेण्ड बनाया गया है।[2,3]अस्थायी बस स्टेण्ड आजाद पार्क पर अजमेर से पुष्कर, मेड़ता, थांवला, कुचेरा, डेगाना, जायल, नागौर मार्ग तथा केन्द्रीय रोडवेज बस स्टेण्ड पर अजमेर से जयपुर, टोंक, भीलवाडा, पाली, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड, कोटा, बूंदी मार्ग, डीडवाना, कुचामन, लाडनूं, मकराना, परबतसर मार्ग तथा ब्यावर, किशनगढ, केकडी, नसीराबाद, बिजयनगर, पीसांगन, भिनाय, सरवाड, मसूदा मार्ग के लिए बसें उपलब्ध रहेगी।उन्होंने बताया कि अन्य जिलों से अजमेर आने वाले एवं अजमेर से अन्य जिलों को जाने वाले वाहनों की लोगबुक आदि सत्यापन के लिएजेल तिराहा पर जयपुर मार्ग के लिए, जी मॉल पुरानी चौपाटी पर नागौर मार्ग के लिए एवं परबतपुरा चौराहा पर भीलवाडा, पाली मार्ग के लिए चैक पोस्टस्थापित की गई है।राजस्थान राज्य के दक्षिणी-मध्य के जनजाति उपयोजना क्षेत्र के अलावा वह क्षेत्र जो पहाडियों से घिरा हुआ हैं तथा जहां अन्य पिछडी जाति एवं अल्पसंख्यक लोगों का अधिवास हैं को मगरा क्षेत्र कहा जाता है। मगरा क्षेत्र में रहने वाले लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के साथ-साथ इस क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं के विकास हेतु वर्ष 2005-06 में मगरा क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया हैं।• मगरा क्षेत्र का आर्थिक एवं सामाजिक आधारभूत ढांचागत विकास। • सामुदायिक एवं अन्य आधारभूत भौतिक परिसम्पत्ति सृजन। • ग्राम स्वच्छता एवं स्वच्छ पेयजल, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, ग्रामीण आंतरिक सडकें, शिक्षा एवं ग्राम में रोषनी की व्यवस्था के कार्यो का प्राथमिकता से सम्पादन। • मगरा क्षेत्रीय विकास योजना एवं अन्य विकास योजनाओं में निर्मित परिसम्पत्तियों का रखरखाव। • स्थानीय नागरिकों को रोजगार एवं जीविकोपार्जन हेतु लघु एवं कुटीर उघोगों की स्थापना एवं आवश्यकक संसाधनों का विकास। • शिक्षा, चिकित्सा एवं पुरातत्व, पर्यावरण संरक्षण आदि से सम्बंधित कार्य। • कला संस्कृति एवं पर्यटन विकास।[4,5]

परिणाम

सथाना, किशनगढ़ के संवतसर में रीका का विस्तार क्षेत्र-6, बेवंजा विस्तार क्षेत्र आैर खोड़ा गणेश गांव में रीको के अपकमिंग औद्योगिक क्षेत्रों में विकास कार्यों ने रफ्तार पकड़ी है। इसी साल अजमेर जिले को यह चार नए रीको औद्योगिक क्षेत्र मिलेंगे, जिससे रोजगार बढ़ने के साथ नए उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा। रीको की अजमेर इकाई के डीजीएम अजय कुमार ने मंगलवार को चारों क्षेत्रों में हो रहे विकास कार्यों को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। चारों क्षेत्रों के प्रगति रिपोर्ट के बारे में जानकारी ली गई है।
रीको से प्राप्त जानकारी के मुताबिक सथाना में 80.80 हैक्टेयर सरकारी भूखंड पर रीको औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जा रहा है। यहां आउटर बाउंड्री डिमार्केशन का कार्य पूरा हो चुका है। क्षेत्र को किस तरह से विकसित किया जाएगा, इसकी प्लानिंग तैयार हो चुकी है। विकास कार्य प्रारंभ होने के साथ प्रशासनिक सेंक्शन आ चुकी है। जबकि किशनगढ़ के संवतसर गांव में रीको औद्योगिक एरिया-6 आउटर बाउंड्री डिमार्केशन पूरा हो चुका है। यह क्षेत्र 87.63 हैक्टेयर निजी आैर 1.62 हैक्टेयर सरकारी क्षेत्र में बनाया जाना है, जिसमें से 71.75 हैक्टेयर क्षेत्र एक्वायर किया जा चुका है। इस क्षेत्र के लिए प्रशासनिक सेंक्शन मिलने के साथ ही विकास कार्य प्रारंभ हो चुके हैं।

| |e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 1, January 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1201071 |

बेवंजा एक्सटेंशन आौर खोड़ा गणेश में भी रीको का नया औद्योगिक क्षेत्र : नसीराबाद के निकट बेवंजा आौर किशनगढ़ के खोड़ा गणेश क्षेत्र में भी रीको का औद्योगिक एरिया विकसित किया जा रहा है। बेवंजा रीको औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार कर नया क्षेत्र बनाया जा रहा है। यह 51.99 हैक्टेयर निजी आौर 16.54 सरकारी भूमि पर बनेगा, इसके लिए 59.90 हैक्टेयर भूमि एक्वायर की जा चुकी है। आउटर बाउंड्री डिमार्केशन का काम पूरा हो चुका है, साथ ही प्लानिंग भी तैयार हो चुकी है। इसी तरह खोड़ा में रीको औद्योगिक क्षेत्र के लिए 44.27 हैक्टेयर भूमि एक्वायर की जा चुकी है। यह एरिया 46.63 हैक्टेयर प्राइवेट आौर 1.61 हैक्टेयर सरकारी भूमि पर बनाया जा रहा है। इसमें आउटर बाउंड्री डिमार्केशन का काम पूरा होने के साथ प्लानिंग अप्रूव्ड हो चुकी है।[6]

निष्कर्ष

करीब 500 भूखंड नए बनाए जाने प्रस्तावित - चालू वर्ष में चार क्षेत्रों में विकास कार्य जारी- जिले में औद्योगिक क्षेत्र का आंकड़ा 40 के पार पहुंचेगा,अजमेर क्षेत्र में अब निवेश की संभावनाएं दिन प्रतिदिन बलवती होती जा रही हैं। मौजूदा औद्योगिक क्षेत्रों की संख्या 30 से 35 पर पहुंच चुकी है। साथ ही जिले में टांटोटी तहसील के शोकलिया व शोकली में रीको की ओर से दो नए औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाएंगे। अजमेर क्षेत्र में अब निवेश की संभावनाएं दिन प्रतिदिन बलवती होती जा रही हैं। मौजूदा औद्योगिक क्षेत्रों की संख्या 30 से 35 पर पहुंच चुकी है। साथ ही जिले में टांटोटी तहसील के शोकलिया व शोकली में रीको की ओर से दो नए औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाएंगे। इसी प्रकार सराधना में भी रीको एक नया औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने जा रहा है। करीब 80 हैक्टेयर भूमि को चिन्हित किया गया है। इसके लिए मुख्यालय जयपुर से सर्च कमेटी आएगी जो चयनित क्षेत्र का दौरा करने के बाद मुख्यालय को रिपोर्ट भेजेगी। मुख्यालय से अनुमति मिलने के बाद भूखंड आवंटित किए जाएंगे। अनुमान के मुताबिक इन दोनों क्षेत्रों में 500 से अधिक भूखंडों पर उद्योग विकसित किए जा सकेंगे।शोकलिया व शोकली. टांटोटी तहसील के शोकलिया-शोकली में 32.8 हैक्टेयर भूमि को चिन्हित किया गया है। इसमें करीब 200 भूखंड प्रस्तावित हैं। भूमि की उपलब्धता के अनुसार इनकी संख्या कम ज्यादा हो सकती है। इन क्षेत्रों में भौगोलिक ि‍स्थति, आधारभूत ढांचे को विकसित करने के लिए संसाधनों आदि की ि‍स्थति की जांच करने मुख्यालय की टीम दौरा करेगी।सराधना में भी नया क्षेत्र होगा विकसित

अजमेर के सराधना विस्तार में 49.3 हैक्टेयर भूमि पर एक और औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जाएगा। यहां पूर्व में 153. 45 हैक्टेयर में 104 भूखंडों पर पहले ही उद्योग निवेश के लिए आवंटित हैं, जहां अधिकांश में औद्योगिक इकाईयां संचालित हैं।आंकड़ों की जुबानी

शोकलिया -शोकली : 32.6 हैक्टेयर, करीब 200 भूखंड प्रस्तावित
सराधना विस्तार : 49. 3 हैक्टेयर, करीब 300 भूखंड प्रस्तावित
इनका कहना है...टांटोटी तहसील के शोकलिया व शोकली तथा पीसांगन तहसील के सराधना क्षेत्र में एक और औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जाएगा। इसके लिए प्रथम चरण की तैयारी पूरी कर ली गई है। जयपुर मुख्यालय से सर्च कमेटी के निरीक्षण के बाद यहां भूखंड आवंटन प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।[7]

संदर्भ

1. "Lonely Planet Rajasthan, Delhi & Agra," Michael Benanav, Abigail Blasi, Lindsay Brown, Lonely Planet, 2017, ISBN 9781787012332
2. ↑ "Berlitz Pocket Guide Rajasthan," Insight Guides, Apa Publications (UK) Limited, 2019, ISBN 9781785731990
3. ↑ Sharma, Dasharatha (1975). Early Chauhān Dynasties: A Study of Chauhān Political History, Chauhān Political Institutions, and Life in the Chauhān Dominions, from 800 to 1316 A.D. (अंग्रेज़ी में). Motilal Banarsidass. आईएसबीएन 978-0-8426-0618-9.
4. ↑ Singh, R. B. (1964). History of the Chāhamānas (अंग्रेज़ी में). N. Kishore.
5. ↑ "दारा शिकोह". भारतीय संस्कृति. अभिगमन तिथि 2021-07-30.
6. ↑ "#World Tourism Day 2018:सूफियत की महक और तीर्थनगरी पुष्कर की सनातन संस्कृति". Patrika News (hindi में). अभिगमन तिथि 2021-07-30.
7. ↑ dinesh. "62 साल पहले राजस्थान के इस जिले की थी खुद की सरकार और विधानसभा". Patrika News. अभिगमन तिथि 2021-07-30.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com